मानव जीवन विकास समिति

वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन

o"k 2019&20

ekuo thou fodkl lfefr

xke fctkjh ikLV e>xoka ftyk & dVuh ¼e-i-½ 483501

bZesy& mjvskatni@gmail.com osclkbV& www.mjvs.org

Qksu ua- & 07626&275223] 275232] 9425157561

nk 'kCn -----------

गांव के छोटे किसान, दलित तथा आदिवासियों के सामाजिक, आर्थिक, नैतिक तथा राजनीतिक विकास की दृष्टि से मानव जीवन विकास समिति नामक सामाजिक संस्था का सन् 2000 में गठन किया गया। विगत बीस वर्षों में संस्था ने अपने उद्धेश्यों को प्राप्त करने मे सराहनीय कार्य किया है। समाज में वंचितों तथा किसानों में आत्मविश्वास के साथ–साथ क्षमतावृद्धि भी हुई है। आम आदमी को हाशिये से निकालकर मुख्यधारा में जोड़ने के लिए संस्था ने अनवरत प्रयास किया है। मध्यप्रदेश के महाकौशल, बुन्देलखण्ड और बघेलखण्ड के बैगा, गोंड़, कोल, जनजाति के लोगों ने तथा दलितों और किसानों ने संस्था के प्रशिक्षण केन्द्र से सामुदायिक नेतृत्व का प्रशिक्षण प्राप्त कर परम्परागत खेती के कौशल का विकास किया है।

निर्भय भाई के नेतृत्व में नौजवान कार्यकर्त्ता साथियों ने अथक परिश्रम किया है जिसके कारण संस्था अपनी स्थापना के समय से निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर हो रही है। संस्था के सम्मानित सदस्यों, तथा कटनी शहर के पत्रकार, बुद्धिजीवियों एवं समाजिक कार्यो से जुड़े लोगों ने अपने महत्वपूर्ण सुझावों तथा निर्देशों से संस्था को आगे बढ़ाने में भरपूर सहयोग दिया है जिसके लिए मैं उनका ह्दय से धन्यवाद करता हूँ।

Mk0 jktxksiky ih0Ogh0
lLFkkid

vkHkkj

समिति का रजिस्ट्रेशन होने के बाद अपने सीमित संसाधनों के साथ केन्द्र के आसपास के गांवों मे जनजागरण व संगठनात्मक कार्य प्रारम्भ किया परन्तु इस कार्यकाल के दौरान ग्रामीण विकास प्रतिष्ठान के सहयोग से सतना, डिण्डौरी काकेर जिले के 5–5 गांवों मे वैकल्पिक कृषि व नर्सरी वृक्षारोपण आदि कार्यो को बढ़ावा देने लायक काम करते–करते समिति ने अपने काम को कटनी जिले में केन्द्रित करते हुए वर्तमान में महाकौशल क्षेत्र को अपना कार्यक्षेत्र बनाया जिसमें वर्तमान में कटनी डिण्डौरी मण्डला व बालाघाट जिले में सघन रुप से काम कर रही है।

मुझे आज खुशी हो रही है कि समिति अपने बीस वर्षों के कार्य को अंजाम देते हुए इस मुकाम में पहुंची है कि जो रिपोर्ट आपके हाथ में है उन सभी कार्यो में समिति से जुड़े एक–एक कार्यकर्ता समिति के सम्मानीय सदस्य गणों का भरपूर सहयोग प्राप्त रहा है समिति को इस पड़ाव तक पहुंचाने में श्री राजगोपाल पी0व्ही0 (श्री राजा जी) का भरपूर आत्मीय आत्मबल प्रदान किया गया है। जिनका मै हृदय से आभारी हूँ। समिति को बनाने के बाद उसके उद्धेश्यों के प्रति जो काम करना चाहता था काफी हद तक मै पीछे पन्द्रह वर्षो मे देखता हूँ तो आत्मशांति मिलती है कई लोगों की रोजी रोटी खड़ी हुई, लोग जागृत होकर अपनी समस्याएँ हल करवाने लगे मानव जीवन विकास समिति के इस केन्द्र को दुनिया के कई देशों के व्यक्तियों तक अपनी पहचान बनाई है, इस समस्त विरादरी एवं टायपिंग कार्य में राम किशोर, तरूनेश तथा हिसाब किताब कार्य में अभय कुमार पटेल और ट्रेनिंग सेंटर व कृषि कार्य मे लगे दयाशंकर यादव तथा रसोई कार्य मे लगे फूलचंद केवट को इसके अलावा अलग अलग प्रोजेक्टो मे काम कर रहे सभी साथीगण का कोटी–कोटी धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ ।

fuHk; flag
lfpo

मानव जीवन विकास समिति

परिचय :

मानव जीवन विकास समिति एक सामाजिक गैर–सरकारी संगठन है, जिसका गठन वर्ष 2000 में किया गया था। विगत 20 वर्षो में संस्था ने अपने उद्धेश्यों के प्रति सजग रहते हुए सराहनीय कार्य किया है और आगे निरन्तर ग्रामीण क्षेत्रों में काम कर रही है। समिति के ऑफिस स्टॉफ से लेकर फील्ड कार्यकर्ताओं की क्षमतावृद्धि के साथ ग्रामीण क्षेत्रों में वंचित समुदाय के साथ उनके क्षमतावर्धन हेतु प्रशिक्षणों का आयोजन करना व लोगों की स्थायी आजीविका की ओर अग्रसर हो रही है, आम आदमी को मुख्यधारा में जोडने के लिये संस्था ने अनवरत् प्रयास किया है। समिति शिक्षा, स्वास्थ, पर्यावरण सुरक्षा, आजीविका आदि पर भी काम कर रही है। मध्यप्रदेश के महाकौशल, बुन्देलखण्ड, बघेलखण्ड, केरल, राजस्थान क्षेत्र के 1621 गॉवों में सघन रूप से काम को बढा रही है, समिति के संस्थापक गॉधीवादी विचारक डॉ. राजगोपाल पी.व्ही. जी के निर्देशन में समिति के निम्न दस स्तम्भों पर विचार–विमर्श कर अपने काम को आगे बढाने में निरन्तर सक्रिय है जबकि समिति कटनी जिले के बड़वारा तहसील के अन्तर्गत बिजौरी गांव में अपने 27 एकड के क्षेत्र में प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना कर जड़ीबूटी संग्रह व संवर्धन, वृक्षारोपण व जैविक खेती को बढ़ावा देते हुए किसानों को प्रशिक्षण देने का भी कार्य कर रही है। समिति का मानना है कि वंचितों और किसानों के जीवन को बेहतर बनाने में सशक्त भूमिका निभाएगी जिससे भूखमुक्त और भयमुक्त समाज की रचना का सपना साकार होगा।

ट्रेनिंग सेन्टर :– संस्था के पास 30 एकड़ भूमि है। इसी भूमि पर संस्था का कार्यालय 2 कमरों पर है, 2 प्रशिक्षण हाल है जिसमे लगभग 200 लोगों को बैठाकर व 100 लोगों को कुर्सी मे बैठकर प्रशिक्षण दिया जा सकता है, एक छोटा प्रशिक्षण हाल है जिसमे 50 लोगों को कुर्सी मे बैठाकर प्रशिक्षण दिया सकता है, गेस्ट रूम है जिसमे 4 कमरे अटैच है, आवासीय भवन 3 बड़े हाल डोरमेट्री है जिसमे 100 लोगों को रूकाया जा सकता है एवं 5 छोटे कमरे जिसमे 50 लोगों को रूकाया जा सकता है, किचिन के बाजू से टीन सेड बना है जिसमे 100 से 150 लोगों को बैठाकर भोजन कराया जा सकता है तथा रसोई कक्ष भी उपलब्ध है, स्टॉफ रूम तथा महिला रूम अलग से है ।

विजन (दृष्टि) – हमारी दृष्टि एक गरिमामयी जीवन जीने के प्राकृतिक संसाधनों का प्रबंधन के लिए समुदाय की क्षमता को बढ़ाकर एक सामाजिक रूप से समावेशी समाज का निर्माण करना।

मिशन (लक्ष्य) – हमारा लक्ष्य जैविक खेती के माध्यम से एक वैकल्पिक आर्थिक मॉडल के रूप मे अहिंसक अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देना, प्राकृतिक संसाधनों के इष्टतम प्रबंधन के लिए गरीबी उन्मूलन और सामुदायिक आत्मनिर्भरता की ओर नेतृत्व करना।

lfefr dk nl LrEHk &

- gekjk vkfFkd& परावलम्बी समाज से स्वावलम्बी समाज निर्माण के सिद्धान्त पर चलते हुए प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन पर आधारित अहिंसक समाज रचना में लगे समुदाय का निर्माण करना ताकि भूखमुक्त समाज की रचना हो सके।
- gekjh jktuhfrd – लोक आधारित लोक उम्मीदबार के सिद्धान्त पर लोकनीति के अनुसार चलने के लिए लोगों को खड़ा करना ताकि सही अर्थो में लोकतंत्र की स्थापना की जा सके।
- gekjh f'k{kk & समग्र विकास पर आधारित ज्ञान का प्रचार प्रसार एवं स्कूली बच्चों के सर्वांगीण विकास के साथ–साथ रोजगारोन्मुखी शिक्षा देना ताकि बेरोजगारी की समस्या का उन्हे सामना न करना पड़े।
- gekjk lekt–अखण्डता, सम्प्रभुता, सम्भाव, परस्पर भाईचाारे के साथ–साथ एकता, समानता, सामूहिकता एवं न्याय पर आधारित समाज जिसमें ऊंच–नीच, अगले–पिछड़े जाति आधारित भेदभाव न हो।
- gekjh laLd`fr & स्थानीय लोक कला एवं संस्कृति के कलाकारों को संगठित कर पुनर्जीवित करना उनका संवर्धन एवं संरक्षण कर वातावरण उपलब्ध करवाना।
- gekjh d`f"k& लम्बे समय तक भूमि की उत्पादन क्षमता बनाये रखने वाली जैविक खेती को प्रोत्साहन देकर पारम्परिक ढ़ग से खेती कर रहे किसानों का उत्साह बढ़ाना ताकि वे कृषि की नीति का विकास कर सके।
- gekjk l'kDrhdj.k & गरीबी झेल रहे दीन दुःखी जो अपाहिजों जैसा जीवन जीने के लिऐ विवश हैं। समाज में विद्यमान ऐसे स्त्री पुरूषों के प्रति असमानता और उपेक्षा को दूर कर समानता का दर्जा दिलवा कर शोषण, अत्याचार एवं भ्रष्टाचार से मुक्त सशक्त सामाजिक ढ़ांचे का निर्माण करना।
- gekjk ifjos'k & स्वच्छ व स्वस्थ वातावरण का निर्माण करना जहाँ हिंसा, लूटपाट, वैमनस्यता, दुराचार तथा तेरे मेरे लिए कोई स्थान न हो।
- gekjk lg;ksx ,oa fe=rk & परस्पर सहयोग की भावना को पुनर्जीवित कर एक दूसरे की सहायता व मित्रता को बढ़ावा देना ताकि पूरा गांव और समाज अपनी समस्याऐं आपसी सहयोग व मित्रता के आधार पर सुलझा सकें।
- gekjh laLFkk & उपरोक्त विचारों के क्रियान्वयन के लिऐ तथा समाज कल्याण के काम का विकास करने में संस्था एक मजबूत आधार स्तम्भ है।

उद्धेश्य : समिति का उद्धेश्य है –

- विज्ञान, शिक्षा, साहित्य तथा ललित कलाओं का विकास करना।
- पर्यावरण को स्वस्थ एवं प्रदूषण मुक्त करने के प्रयासों को बढ़ावा देना।
- वनवासियों की आजीविका, समृद्धि एवं सम्मान की रक्षा के लिए प्रयास करना।
- बच्चों के सर्वांगीण विकास के अनुरूप परिवेश की रचना के लिए प्रयास करना।
- जैविक कृषि पद्धति का क्षेत्र मे प्रचार–प्रसार करना ताकि कृषि उत्पादकता मे वृद्धि हो।
- खेती को लाभ का धन्धा बनाने के लिए जैविक तरीके को अपनाना व वृक्षारोपण को बढ़ावा देना।
- विस्थापितों को न्यायपूर्ण अधिकार दिलाने के लिए शान्ति और अहिंसा के मार्ग को प्रशस्त करना।
- महिलाओं को सम्मान तथा अधिकार दिलाने के लिए शिक्षा, ज्ञान विज्ञान का प्रचार–प्रसार करना।
- वनवासियों को वन/वनोपज पर उचित अधिकार दिलवाना एवं संघर्ष कर रचनात्मक कार्य करना।
- सामाजिक कल्याण के लिए कार्य करना तथा अन्याय एवं शोषण के विरूद्ध लोक चेतना जागृत करना।

कार्यक्रमों की उम्मीदें : समिति का कार्यक्रमों से उम्मीद है –

- पर्यावरण सुरक्षा एवं किसानों को जैविक खेती करने बढ़ावा।
- हिंसा मुक्त समाज का निर्माण तथा नशामुक्ति के खिलाफ माहौल निर्माण।
- शासकीय योजनाओं की जानकारी व क्रियान्वयन व युवाओं मे जागरूकता।
- जल स्तर मे बढ़ावा एवं सुधार हेतु तालाब, डेम, चैक डेम व छोटे छोटे कन्टूर का निर्माण।
- गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों को बढ़ावा मिलेगा तथा स्वरोजगार स्थापित होंगे, पलायन रूकेगा।
- जल, जंगल और जमीन सुरक्षित होगी तथा लोगों की स्थायी आजीविका का मॉडल निर्माण।
- पंचायतीराज की समझ का विकास तथा महिलाओं मे सशक्तिकरण व क्षमतावर्द्धन का विकास।
- शिक्षा स्तर का बढ़ना तथा स्वावलम्बन प्रक्रिया मे बढ़ावा एवं आदिवासी क्षेत्रों मे जागरण का संकेत।

रणनीति :– उद्धेश्यों की पूर्ति करने मे निम्न रणनीति का उपयोग हो रहा है।

- मूलभूत सुविधाओं जैसे पेय जल, आवास, बिजली, शिक्षा पर बल देना।
- एफ.आर.ए. के तहत लोगों को वन भूमि मे काबिजों का अधिकार पत्र व कब्जा दिलाना।
- सामाजिक कुरीतियों को समझाने लोकगीत, नाटक प्रदर्शन आदि के माध्यमों से समझाना।
- पंचायत जनप्रतिनिधियों व जागरूक मंच का अधिकारों के प्रति निरन्तर क्षमतावर्द्धन करना।
- मीडिया व अधिकारियों के साथ संवाद करना ताकि जानकारी का अदान–प्रदान होता रहे।
- योजनाओं का विकेन्द्रीकरण मे मदद एवं शासकीय विभागों से तालमेल बैठाना व काम कराना।
- जन जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन, बैठक व छोटे छोटे नुक्कड़ सभाऐं आयोजित करना।
- कार्यकर्ताओं द्वारा गांव गांव मे संगठन एवं स्वसहायता समूहों का निर्माण करना एवं संचालन।
- स्कूलों मे वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन कर बच्चों मे शिक्षा के प्रति जागरूकता लाना।

dk;{k= ,d utj esa

dz-	ftyk	Cykd	xkao
1	कटनी	बडवारा	121
2	बालाघाट	बैहर	22
3	उमरिया	मानपुर	5
4	सिहोर	बुधनी	10
5	जोधपुर (राजस्थान)	जोधपुर	10
6	केरल 4 जिले	4 ब्लॉक	15
7	दमोह	तेन्दूखेडा	60
8	डिण्डौरी	5 ब्लॉक	600
9	मण्डला	6 ब्लॉक	720
10	दमोह और पन्ना (पार्टनरशिप)	शाहनगर	20
		जबेरा	20
dqy	14	23	1621

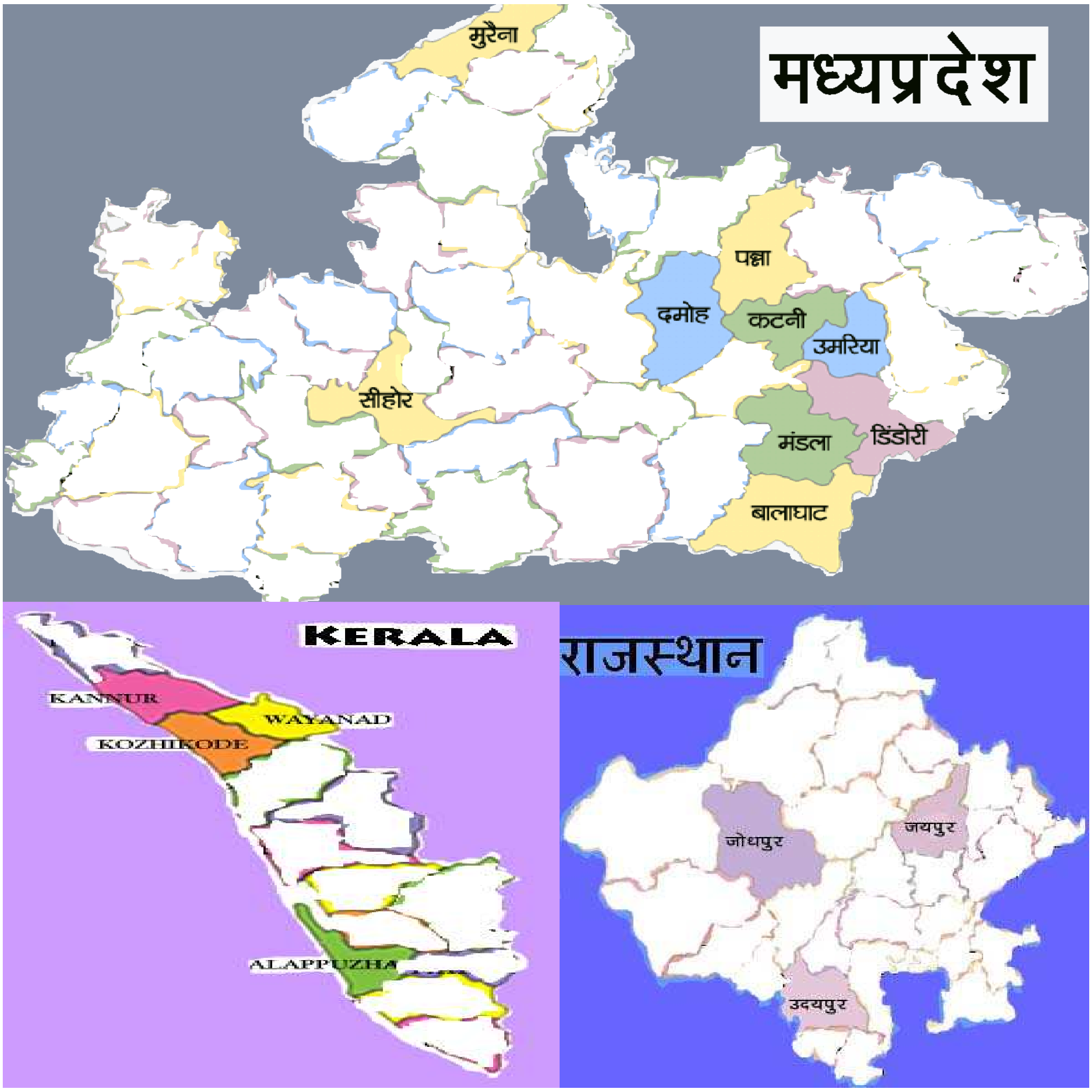

मुख्य गतिविधियां

समिति की विभिन्न गतिविधियों मे से मुख्य गतिविधि है भूमि व जल प्रबंधन, प्राकृतिक संसाधनों का प्रबंधन, स्वास्थ्य व स्वच्छता एवं कचरा प्रबंधन, आपदा प्रबंधन, स्थानीय कला का विकास, पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन, जड़ी बूटी, सग्रह एवं संवर्धन, नाडेप भू–नाडेप, जैविक कृषि को बढ़ावा, वन अधिकार अधिनियम के तहत काबिजों को अधिकार दिलाना, पंचायत जनप्रतिनिधियों का क्षमतावृद्धि आदि गतिविधियां समिति गंभीरता से संचालन कर रही है।

आजीविका कार्यक्रम :– मानव जीवन विकास समिति द्वारा भारत रूरल लाईवलीहुड फाउण्डेशन दिल्ली की मदद से दमोह जिले के तेन्दुखेड़ा और जबेरा ब्लॉक एवं पन्ना जिले के शाहनगर ब्लॉक के 100 गांव मे परियोजना आधारित आजीविका कार्यक्रम समिति अपने कार्यकर्ता टीम की मदद से कर रही है। यह कार्यक्रम से लोगों को जोड़कर काम करना होगा ताकि लोगों की मदद से लोगों के लिए काम किया जा सके। साथ लोगों की स्थायी आजीविका सुनिश्चित किया जा सके। गांव के लोगों के पास पुस्तैनी खेती किसानी की जमीन बहुत कम थी जिससे चलते खेती से प्राप्त आमदनी से ही परिवार का भरण पोषण ठीक से चल सके संभव नही था। इसके लिए लोगों को वनभूमि पर जो कब्जा कर रखा है उसी भूमि मे खेती को बढ़ावा दिया जाना होगा। गांव के लोगों को बताया गया की जो आपने वनभूमि को काबिज कर रखा है उसका मालिकाना हक व पट्टा सरकार वन अधिकार अधिनियम 2006 के तहत दाबा आपत्ति फार्म भरने पर प्रमाणित होने पर पट्टा दे रही है। फिर आप उस भूमि पर अच्छी खेती कर आमदनी कमा सकते है। इसके बाद वन अधिकार अधिनियम से प्राप्त खेती की जमीनों को विकसित करना और बाकी लोगों को वन अधिकार अधिनियम के तहत दावा लगवाकर पट्टा दिलाना और उस जमीन को खेती योग्य शासकीय योजनाओं की मदद से तैयार करना। परियोजना मे मुख्य रूप से जैविक खेती को बढ़ावा देना, पानी संरक्षण के काम, शासकीय योजनाओं तक लोगों की 100 प्रतिशत पहुंच बन सके इसके लिए काम कर रहे है। पूरे परियोजना मे 100 गांव के 10 हजार परिवारों के साथ अगले तीन वर्ष मे 15000 रूपये आमदनी को बढ़ाना प्रमुख लक्ष्य रखा गया है। गांव के लोग पूरी तन्मयता से परियोजना के कामों मे हाथ बंटा रहे है और हर संभव प्रयास भी कर रहे है। सरकारी योजना का लाभ गांव के सभी लोगों को प्राथमिकता से मिल सके इसे ध्यान मे रखकर काम किया जा रहा है। किसानों के खेत मे पानी की व्यवस्था करवाना, सिंचाई की सुविधा करवाना, खेती योग्य जमीन बनाना, जैविक खेती को बढ़ावा देने आदि काम कर रहे है। किसान की जमीन मे खेत तालाब योजना के तहत तालाब निर्माण कराना, डेम चैक डेम बनवाना जिससे पानी का रूकाव होगा और वाटर लेवल भी बढ़ेगा और जिन किसानों के पास स्वयं के खेत मे पानी की सुविधा नही उसे भी लाभ मिलेगा। जैविक खेती करने के लिए किसान अपने अपने घरों मे गोबर खाद, कम्पोस्ट व वर्मी कम्पोस्ट खाद, कीटनाशक दवाई का निर्माण कराकर जैविक खेती को लगातार बढ़ाने मे लगे हुए है। पिछले साल की अपेक्षा इस साल की खेती मे आमदनी 25 से 30 प्रतिशत बढ़ा है लग रहा है कि किसानों को अच्छे बाजार की उपलब्धता होगी तो उत्पादकता बढ़ने के साथ साथ आमदनी मे भी इजाफा होगा।

आजीविका के साधन

खेती की जमीन सुनिश्चित कराना,
जैविक खेती को बढ़ावा देना,
सिंचाई की सुविधा करवाना,
खेती योग्य जमीन बनाना,
तालाब निर्माण कराना,
डेम चैक डेम बनवाना,
कम्पोस्ट व वर्मी कम्पोस्ट खाद,
गोबर खाद और केचुआ खाद बनाना,
कीटनाशक दवाई का निर्माण व उपयोग।

एडवोकेसी :– **वन अधिकार अधिनियम कानून 2006** बना जिससे अधिकांश लोगों को लाभ होगा। इस काननू के तहत वन एवं परम्परागत वनवासियों को वनभूमि पर काबिजों को पट्टा दिया जाना है जिससे कब्जा वाली जमीन का वास्तविक मालिकाना हक प्राप्त होगा। शासन की जनकल्याणकारी योजनाऍं गांवों तक सुचारू रूप से पहॅुचे और पात्र हितग्राहियों को उचित लाभ मिले इस दिशा में समिति अपने कार्यकर्ताओं के साथ फिल्ड में लगातार काम कर रही है। गांवों में समूह तैयार करना, शासन की योजनाओं की जानकारी देना और उचित सलाह देते हुए संबंधित विभाग तक पहुंचाना। **एफ.आर.ए. कानून** न केवल वन मे निवास करने वाली अनुसूचित जनजातियों और अन्य परम्परागत वन निवासियों के वन संसाधनों पर उनके मौलिक अधिकारों की पुष्टि करता है बल्कि वन, वन्य जीव, जैव विविधता संरक्षण के प्रति समुदायों के दायित्वों को भी सुनिश्चित करता है। आपको मालूम होगा की एकता परिषद के नेटवर्क मे मानव जीवन विकास समिति गांव गांव मे आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र मे लोगों उनके अधिकार दिलाने का काम कर रही है।

समिति अपने कार्यक्षेत्र दमोह, डिण्डौरी, मण्डला व बालाघाट जिले के कई गांवो का भ्रमण कर वंचित समुदाय से चर्चा कर लोगों की मदद करने आगे आया है। लोगों से चर्चा दौरान निकलकर आया कि वनवासियों को लगातार सरकार वनभूमि से बेदखल कर रही है, खेती की फसलों को नष्ट किया जा रहा है बहुत बड़ी समस्या सामने आई। ऐसे मे लोगों का बहुतायत मे पलायन हो रहा था गांव मे रोजगार का अभाव था, खेती की भूमि नही थी किसान पलायन करने मजबूर था। तभी मानव जीवन विकास समिति कार्यकर्ताओं ने गांव गांव जाकर सर्वे किया और लोगों को **एफ. आर.ए. कानून** की जानकारी दी तब लोगों ने वनभूमि का दाबा, आपत्ति फार्म भरवाया जिससे लोगों को अपनी काबिज भूमि का पट्टा सरकार द्वारा दिया गया।

प्राप्त पट्टो की जानकारी इस प्रकार है : दमोह जिले मे वन एप मित्र पोर्टल मे 2215 आवेदन दर्ज हुए है जिसमे से 241 परिवार को पट्टे प्राप्त हुए। डिण्डौरी जिले मे 138 पट्टे, मण्डला जिले मे 87 पट्टे, बालाघाट जिले मे 75 पट्टे प्राप्त हुए। अब लोगों के साथ मिलकर तय किया गया की आप अपनी भूमि को खेती योग्य बनाईये, खेती की जमीन पर सिचाई की सुविधा कराईये कुछ सरकार की योजनाओं से कुछ लोगों के खुद की मेहनत से जमीन को खेती योग्य बनाया गया। वन अधिकार अधिनियम (एफआरए) से प्राप्त जमीन पर जैविक खेती कराया जाकर उनकी आमदनी को बढ़ाया जा रहा है। पिछले सालों की अपेक्षा इस साल जैविक खेती से किसानों को आमदनी मे 25 से 30 प्रतिशत अतिरिक्त लाभ हुआ है।

डिजिटल साक्षरता कार्यक्रम :– यह कार्यक्रम मानव जीवन विकास समिति, फिया फाउण्डेशन भोपाल के सहयोग से मण्डला व डिण्डौरी जिले के 11 ब्लॉको के 1320 गांवों मे 330 इंटरनेट साथियों की सहायता से 231000 इस कार्यक्रम से जोड़कर ग्रामीण महिलाओं को डिजिटल साक्षरता की ओर बढ़ावा दे रही है। इस काम मे लगे इंटरनेट साथी को 2 स्मार्ट फोन दिये गये है जिसका उपयोग महिलाओं को सिखाने के लिए किया गया। अब वो साथी गांव की ग्रामीण महिलाओं को स्मार्ट फोन चालू बंद करने से लेकर मेन मिनु, मुख्य मिनु आदि को सांकेतिक चिन्हों की मदद् से पहचान कराकर उन्हे इंटरनेट चालू बंद करना, कैमरे से फोटो खींचना, वीडियो बनाना एवं गैलरी से फोटो और वीडियो की पहचान करना भी बताया गया। सेहत के लिए यूट्यूब के जरिये महिलाऐ अपने स्वास्थ्य की सुविधायें व घरेलु नुख्से सीख रही है। यह भी बताया गया कि बच्चों की शिक्षा मे सुधार होगा। साथ ही व्यवसाय, स्वरोजगार व नौकरी के अवसर भी बढ़ रहे है। इस प्रोग्राम से महिलाओं व परिवार मे बदलाव देखने को मिल रहा है।

यह कार्यक्रम मण्डला जिले के 6 ब्लॉक मण्डला ब्लॉक के 140 गांव की 24500 महिलाऐं, नारायणगंज ब्लॉक के 128 गांव की 22400 महिलाऐं, मोहगांव ब्लॉक के 84 गांव की 14700 महिलाऐं, घुघरी ब्लॉक के 96 गांव की 16800 महिलाऐं, नैनपुर ब्लॉक के 136 गांव की 23800 महिलाऐं व बिछिया ब्लॉक के 136 गांव की 23800 महिलाऐं और डिण्डौरी जिले के 5 ब्लॉक डिण्डौरी ब्लॉक के 140 गांव की 24500 महिलाऐं, समनापुर ब्लॉक के 116 गांव की 20300 महिलाऐं, बजाग ब्लॉक के 920 गांव की 16100 महिलाऐं, करंजिया ब्लॉक के 104 गांव की 18200 महिलाऐं, शहपुरा ब्लॉक के 148 गांव की 25900 महिलाओं को प्रशिक्षित किया गया है। इस प्रकार से 2 जिले के 11 ब्लॉक की 1320 गांवो की 2 लाख इकतीस हजार (231000) ग्रामीण महिलाओं को स्थानीय इंटरनेट साथियों की मदद् से डिजिटल साक्षर, स्मार्टफोन चलाने, इंटरनेट का उपयोग करने, गूगल के माध्यम से महत्वपूर्ण जानकारियां खोजना सीख पायी। स्मार्ट फोन सीख कर गांव की महिलाऐं अपने व्यवसाय मे वृद्धि कर रही है, इससे लोगों की आमदनी मे भी इजाफा हुआ है। शिक्षा के क्षेत्र मे भी बच्चों को स्मार्ट फोन शिक्षक की तरह मददगार साबित हो रहा है। वही पर सिलाई के नये डिजाईन व मेंहदी के नये डिजाईन सीखकर अपनी आजीविका खड़ी कर रही है। इन्ही महिलाओं के यहां खेती को जैविक तरीके से नवाचार के माध्यम से इन्टरनेट की मदद से गूगल के प्रयोग से खेती के नये तरीके व उपाय सीखकर खेती की आमदनी को बढ़ाया है। कुछ साथियों ने सिलाई सेन्टर, ब्युटी पार्लर, किराना दुकान के अलावा कम्प्युटर सेंटर भी स्थापित कर अच्छी आमदनी कमा रही है।

ग्रामीण पर्यटनः— रूरल टूरिज्म प्रोग्राम मानव जीवन विकास समिति ने फ्रान्स की संस्था तमादी के साथ मिलकर रूरल टूरिज्म (ग्रामीण पर्यटन) की अवधारणा के अनुसार एक सामाजिक और सांस्कृतिक अदान—प्रदान की गतिविधियों का संचालन कर रही है। भारत में हमने तीन तरह के सर्किट बनाकर रखे हैं और तमादी के साथ मिलकर आगे बढाते हैं जिसमें 15 दिन, 17 दिन एवं 25 दिन शमिल है। 15 दिन में दिल्ली से जयपुर , अलवर, उदयपुर, आगरा, से दिल्ली वापसी तथा 17 दिन में दिल्ली से कटनी या भोपाल, उमरिया, सिहोर, बोरी, सांची, आगरा से दिल्ली वापसी। 25 दिन वाले में कटनी, उमरिया, भोपाल, सिहोर जयपुर, उदयपुर, जोधपुर ओर्छा खजुराहो से वापसी दिल्ली होते हुए अपने देश को रवाना हो जाते है। गांव के समूह कल्चरर एक्सचेंज प्रोग्राम के तहत तमादी द्वारा भेजे जा रहे मेहमानों के आवास एवं भोजन की व्यवस्था में सहयोग करते है। और जो पैसा लॉज व होटल मे रूकने पर खर्च होता था वह पैसा गांव के समूह को ही दिया जाता है जिससे समूह से जुड़े लोगो की आर्थिक स्थिति म सुधार हुआ है। गांव मे ही लोगों के बीच रहते है लोकल कल्चर को देखते व सीखते है। विदेशी ग्रुप का गांव मे आने जाने से गांव के समूह का भी सुधार हुआ है।

गांव मे लोगों का समूह अच्छा मजबूत है, समूह मे काम करना लोगों को अच्छा भी लगता है। यहां के आदिवासी लोगों का लोकल सांस्कृतिक कल्चर काफी प्रसिद्ध है जिसे दूर दूर से लोग देखने आते है काफी देखने व सीखने योग्य है। इस वर्ष 3 ग्रुप आये जिसमे 15 विदेशी बन्धु की भागीदारी रही है। जिसे मध्यप्रदेश के अलग अलग जगहों पर भ्रमण कराया गया। विदेश से आने वाले महिला, पुरूष, बच्चे सभी का गॉव में ही रूकना, गॉव में खाना खाना और गांव के परिवारजनों के साथ मिलकर बैठक, संवाद, चर्चा परिचर्चा कर वहां के परिवेश को जानना व समझना शामिल है। वही 4—5 दिन तक रूक कर गांव की संस्कृति से परिचित होना, गांव में चल रही आर्थिक गतिविधियों को देखना समझना, खेती जैसे कार्यक्रमों में बढ़ चढ़कर हिस्सा लेना आदि गतिविधियॉ शामिल रहती है। सामाजिक सांस्कृतिक आदान—प्रदान और आर्थिक सहायता के माध्यम से लोगों की गरीबी दूर करना। विदेशियों के यात्रा लागत का 8 से 10 प्रतिशत समूहों को राशि प्राप्त होती है जिससे गैर कृषि कार्य को बढ़ावा देने कार्य किया जा रहा है। आदर्श गांव बनाने के लिए भी कार्य किया जा रहा है। गांव स्वावलम्बन की दिशा मे काम कर रहा है। विदेशी पर्यटको का गांव मे आने से काफी प्रभाव देखने मे आया है, साफ सुथरी सड़क, नाली व पेयजल की व्यवस्था देखने को मिल रही है। इस गांव मे विदेशियों के आगमन की जानकारी स्थानीय प्रशासन को दी जाती है जिससे गांव को यह फायदा हो रहा है कि प्रशासन भी उस गांव के लिए पहले काम कराता है ताकि वहां की खबर विदेश तक अच्छी जाये।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था (रूरल इकोनॉमी):–प्रदेश व प्रदेश के बाहर जहॉ भी लोग अपने गॉव की अर्थव्यवस्था को ठीक करना चाहते हैं या आगे बढ़ाना चाहते हैं तो उस गॉव में उपलब्ध प्राकृतिक संसाधन, पानी, जमीन और वनोपज का संकलन जैसे कार्यों को प्राथमिकता के साथ करना चाहते हैं उन गॉवों के साथ सामूहिक रूप से बैठकर संगठन के माध्यम से ऐसे कार्यक्रमों को आगे बढाने के लिये कार्यक्रम तय किये जाते हैं जैसे mefj;k ftys dk ejbZ dyk] dVuh ftys dk dNkjh xkao esa कई प्रकार के ग्रामीण अर्थव्यवस्था के तहत काम किये जा रहे हैं, जिसमें खेती को बढाना, महिलाओं के द्वारा सब्जी उत्पादन को बढाना वनोपज का संकलन एवं मार्केटिंग, सिंचाई सुविधा के साथ खेती में उत्पादन बढाकर अपने भरण पोषण के लिये अनाज उत्पादन करना। उमरिया जिला अन्तर्गत मानपुर ब्लॉक का मरईकला गांव बाधवगढ़ टाईगर रिजर्ब रिसोर्ट से लगा हुआ गांव है। इसके आसपास नदि, नाले होने से पानी का अच्छा स्त्रोत है, यहां की जमीन भी काली, भुरभुरी वाली होने से सभी फसलों के लिए अच्छा उत्पादन देती है। गांव के लोगो का सबसे पसंदीदा फसल लगाना व उत्पादन से जुड़ा हुआ है। हल्दी उत्पादन मे रासायनिक खाद का बिलकुल भी उपयोग नही करते है, जैविक खाद गोबर, कम्पोस्ट व वर्मीकम्पोस्ट खाद का उपयोग करते है जिससे उत्पादन मे वृद्धि के साथ साथ उसकी गुणवत्ता भी अच्छी होती है जिससे आसपास के लोग जैविक हल्दी के नाम से खरीदने आते है।

कछारी गांव मे 15 महिलाओं का समूह बना है ये समूह काफी सक्रिय है यह जैविक सब्जी उत्पादन के लिए जाना जाता है। जैविक सब्जी का उत्पादन के आधार पर बाजार की उपलब्धता नही होने से उमरिया जिले का बाजार करते है वहां से लगा हुआ कालरी इलाका होने से सब्जी का मूल्य अच्छा मिल जाता है जिससे अपने लोकल बाजार से 25 से 30 प्रतिशत अधिक लाभ हो रहा है। सब्जी उत्पादन के अलावा भी धान, राहर, चना व गेहूं का भी अच्छा उत्पादन कर रहे है। इस गांव के लोगों का मुख्य कार्य कृषि कार्य व कृषि से सम्बंधित मजदूरी कार्य करना पसंद करते है। इसके अलावा जो समय बचता है उसमे कुछ समूह पास ही मे जंगल होने से वहां पर सरई व तेन्दुपत्ता का संग्रहण करते है। सरई के पत्ते से दोना पत्तल बनाने वाली मशीन लगाकर दोना व पत्तल बनाये जा रहे है। और तेन्दुपत्ता संग्रहण कर बेच देते है। कछारी गॉव में 15 महिलाओं का समूह है जिसे समिति द्वारा खेती को बढ़ावा देने के लिए 150000 रूपये का सपोर्ट किया गया जिसमे से प्रत्येक वर्ष की अपेक्षा इस वर्ष फसल मे डेढ़ गुनी बढ़ोत्तरी हुई है। इससे साफ सिद्ध होता है कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुधारने के लिए आर्थिक सपोर्ट की जरूरत है।

अहिंसा प्रोत्साहन व शिक्षा केन्द्र (गो–रूरबन कैम्प):– मानव जीवन विकास समिति अपने उद्देश्यों के अनुरूप समाज व देश में अहिंसा को बढावा देने के लिए कई प्रकार की गतिविधियां संचालित करती हैं, जिसके अंतर्गत युवाओं में अहिंसा की शिक्षा के सैद्वांतिक और व्यावहारिक समझ विकसित किया जाता है। इसके लिए शहरी व ग्रामीण युवाओं का गोरूरवन कैम्प आयोजित किया जाता है जिससे दोनों मिलकर एक दूसरे के परिवेश को समझेंगे और विकास की रणनीति बनायेंगे। इस प्रकार से साल मे 4–5 कैम्प लगाये जाते है जिससे युवा अपनी स्वेच्छा से भाग लेता है और गतिविधि मे मदद् करता है। ये ग्रुप गांव के लोगों को जागरूक करने का काम करती है जिससे आगे आकर विकास का हिस्सा बने। गांधीवादी विचारधारा को अपनाने व उनके बताये मार्ग पर चलने के लिए लोगों को अधिकांशतः प्रोत्साहित किया जा रहा है। यह की आगे आने वाले समय मे विकास का मार्ग प्रसस्त होगा। शैक्षणिक संस्थानों मे अहिंसात्मक शिक्षा को प्रोत्साहन व बढ़ावा मिलेगा।

अहिंसा परमो धर्मः महात्मा गांधी के विचारों का अनुकरण करना उन्होने कहा था कि अहिंसा ही परम धर्म है। हम सबको अहिंसावादी बनना चाहिए। हिंसा करना समस्याओं से निपटना नही कहा जा सकता है। हिंसा से लड़ाई, झगड़े, दंगा आदि का जन्म होता है इससे छुटकारा पाने का एक मात्र उपाय है अहिंसा। एकता परिषद के प्रसिद्ध गांधीवादी विचारक श्री राजागोपाल पी.व्ही. के बताये हुए मार्ग पर हम चल रहे है, अनुकरण कर रहे है। इस कैम्प के माध्यम से अहिंसा की शिक्षा दी जाती है, इससे एकता, समानता, सामूहिकता, सौह्मर्द की भावना का विकास होता है। सामाजिक कार्य मे लगे समाजसेवी गोरूरबन कैम्प मे भाग लेकर अपने आप को दक्ष बनाते है।

गोरूरबन का मतलब यह भी हो सकता है कि शहरी क्षेत्र के लोग ग्रामीण परिवेश को समझे और ग्रामीण क्षेत्र के लोग शहरी परिवेश को समझे, एक दूसरे की सामाजिक व आर्थिक स्थिति का अवलोकन होता है। शहरी क्षेत्र के लोग ग्रामीण परिवेश व वातावरण को जल्दी समझ पाते है लेकिन ग्रामीण क्षेत्र के लोग शहरी परिवेश व वातावरण को समझने मे देरी करते है। दोनो ग्रुप एक दूसरे को गहराई से समझने का प्रयास करते है चिन्हित समस्याओं से निपटने की रणनीति भी बनाते है। गांव को स्वावलम्बी बनाने की दिशा मे काम कर रहे है।

स्वास्थ प्रबन्धन :– स्वास्थ्य के क्षेत्र मे समिति काम कर रही है।

मानव जीवन विकास समिति हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी स्वास्थ शिविर का आयोजन समिति प्रांगण मे करवाया। स्वास्थ के क्षेत्र मे पाया गया अधिकांशतः लोग आंख की समस्या से ज्यादा परेशान है। अपने आप पास के गांव का सर्वे कराया गया जिसमे जिसमे दो सौ से ज्यादा लोग आंख की समस्या से गृसित पाये गये जैसे नजदीक व दूर का कम दिखना, आंख मे पानी बहना, आंख मे जलन होना, आंख का दर्द करना आदि शामिल है। समिति ने तय किया की नेत्र रोग विशेषज्ञ से सम्पर्क कर नेत्र जांच शिविर का आयोजन किया जाये जिससे लोगों को स्वास्थ सुविधा पहुंचायी जा सकती है। जबलपुर के जाने माने डॉक्टर देव जी नेत्रालय के **संस्थापक डॉ. पवन स्थापक जी** से बातचीत करने के मुताविक बिजौरी मे 4 मार्च 2020 को विशाल नेत्र जांच शिविर का आयोजन किया गया। डॉ. पवन स्थापक जी एवं उनके सहयोगी विशेषज्ञ डाक्टर्स टीम द्वारा **निःशुल्क नेत्र जांच शिविर मे 200 से ज्यादा लोगों का** आंख के सभी तरह के रोगों का जांच व उपचार किया गया। इसके अलावा मोतियाबिंद से पीड़ित रोगियों का **निःशुल्क ऑपरेशन हेतु 24 रोगियों** को जबलपुर ले जाया गया जिनका सफल ऑपरेशन भी किया गया बांकी को आवश्यकतानुसार चश्मा उपलब्ध कराया गया। इस प्रकार से समिति काम कर रही है।

LoPNrk ,o dpjk izcU/ku %&

गाँधी जी के दैनिक कार्यक्रमों में सफाई अति आवश्यक कार्य था। उन्हीं आदर्शो का पालन करते हुए संस्था गॉवों में स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन कर लोगों को जागरूक करने का काम करती है। स्वच्छता हमारे दैनिक जीवन मे बहुत ही आवश्यक पहलु माना जाता है। साफ सफाई से ही स्वच्छता आती है हमारे आस पास का वातावरण तभी शुद्व होगा जब साफ सफाई होगी। वातावरण साफ न होने से कई प्रकार की बीमारी का जन्म होता है जिससे निपट पाना मुश्किल होता है। इस अवस्था मे स्वच्छता अभियान अभिन्न अंग है जिससे स्वच्छ वातावरण का निर्माण कर सकते है। लोगों को बताया जाता है कि आपको अपने घरों के आस पास साफ सफाई स्वयं रखनी होगी, दूसरों को आपके घर के पास सफाई करने की जरूरत नही है इससे आपको ही फायदा होगा। समिति हर वर्ष स्वच्छता अभियान चला कर लोगों को जागरूक करने का काम भी करती है। घरों व घरों के आस पास फैली गंदगी तथा कचरा को खुले मे न फेकने की सलाह दी जाती है इसके लिए कचरा दान/कूड़ादान का भी निर्माण कराया जाता है। कचरा दान प्रत्येक घरों मे तो होगा ही इसके अलावा गांव के तिराहे, चौराहे पर भी कचरा दान बनवाया जाकर कचरा इकट्ठा कराया जाता है। कचरा दान मे इकट्ठा हुआ कचरा अब खाद के रूप मे परिवर्तित होकर हमे फसलों मे खेती के काम आता है। कचरे के प्रबन्धन के लिए लोगों को नाडेप पिट, कम्पोस्ट पिट, वर्मी कम्पोस्ट पिट बनाकर उसमें कचरा डालने के लिए समझाया जाता है।

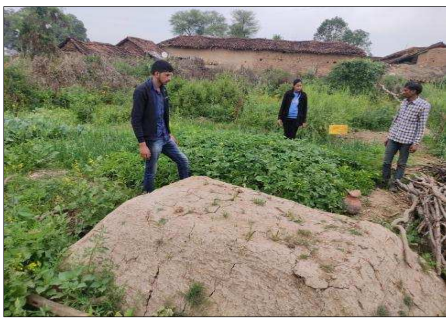

नाडेप व भु–नाडेप – मुख्यतः किसान घर के कूड़े कचरे को किसी भी जगह एकत्रित करते रहते है और खेत पर डालते है। यह पूरी तरह पची हुई खाद नही होती है जैविक कम्पोस्ट खाद तैयार करने के लिए नाडेप व भु–नाडेप तैयार कर खाद बनाया जाता है। इसके फीट चौड़ाई और 12 फीट लम्बाई मे भूमि को समतल किया जाता है इसे गोबर से लीप लिया जाता है फिर 6 इंच गोबर कचरे की परत बिछाकर इसे पानी से अच्छी तरह गीला कर इसके ऊपर आधा से 1 इंच गीली मिट्टी की परत दर परत 4 फीट ऊचाई तक तैयार कर लिया जाता है। इस तरह से 3 माह मे यह पचकर जैविक खाद तैयार हो जाता है।

भूमि और जल का प्रबंधन :

भूमि प्रबंधन के साथ साथ जैविक खेती को बढ़ावा देना बहुत ही जरूरी है। वर्तमान मे देखा जाये तो अधिकांश मात्रा मे भूमि का दोहन हो रहा है, भूमि पर से पेड़ो को लगाने की बजाय काटा जा रहा है। पेड़ कटने से आपको पता ही होगा की बारिस का पानी तेजी से गिरने के कारण मिट्टी का कटाव ज्यादा होता है जिससे भूमि की उर्वरता नष्ट होती है। भूमि का कटाव अधिकांशतः बारिस के समय मे होता, बारिस का पानी रोकने के लिए तालाब, डेम, चैक डैम, मेढ़बंदी कराकर रोका जा सकता है। अगर लगातार इसी प्रकार से भूमि का दोहन होता रहा तो आने वाले समय मे भूमि पर किसान खेती करने को तरस जायेगा। इसको अभी से हम सभी को भूमि को बचाने का प्रयास करना चाहिए, भूमि की उर्वरक क्षमता बनाये रखना है और मिट्टी के कटाव को रोकना है तो अधिक संख्या मे पेड़ लगाना ही होगा। इसके लिए समिति अपने ट्रेनिंग सेंटर मे खेती की जमीन को छोड़कर बाकी जगह मे वृक्षारोपण कराये हुए है और प्रतिवर्ष लगभग 20 से 25 प्रकार की प्रजाति के पौधों का रोपण 1000 से 1500 की संख्या मे कराती है। यह भी तय किया है कि समिति से जुड़े कार्यकर्ताओं के जन्मदिवस, त्यौहार, उत्सव आदि मे जरूर पौधा रोपण कराती है। समिति के आस पास के गांव मे भी प्रचार प्रसार कर पौधारोपण कराने को जागरूक करती है। समिति के पास एक छोटी सी नर्सरी भी है जिसमें पौधा तैयार कराकर खेत मे पौधे लगवाती है इसके अलावा दूसरों को भी जन्मदिन व अन्य उत्सव मे पौधा लगाने के लिए निःशुल्क पौधा प्रदान करती है।

जैविक खेती को बढ़ावा :

जैविक खेती को बढ़ावा बहुत जरूरी हो गया है क्योंकि जिस प्रकार से भूमि से पेड़ काटने से भूमि का दोहन हुआ है उसी प्रकार से किसान खेती की फसल मे रासायनिक खाद के प्रयोग से भूमि को ही नही फसल को भी हानि पहुंचाया है। इसका नतीजा यह भी देखने को मिल रहा है कि रासायनिक खाद का तत्व अनाज मे मिलने से लोगों मे रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो गई है, इससे नई नई बीमारियां भी पनप रही है। इन सभी समस्याओं से निपटारा पाना है तो सभी को जैविक तरीके की खेती को अपनाना होगा। समिति अपने तरीके से कार्यक्षेत्र के गांव मे कार्यकर्ताओं की मदद से किसानो को जैविक खेती करने प्रोत्साहित कर रही है। खेती मे गोबर खाद, केचुआ खाद, कम्पोस्ट खाद, वर्मीकम्पोस्ट खाद के अलावा कीटनाशक की जगह गौ–मूत्र, नीम अस्त्र, घन जीवामृत, बीजामृत, मटका खाद, पंचगव्य, अजोला का उपयोग करना बताते और सिखाते है। पौधो को पोषक तत्व प्रदान करने के लिए अलग अलग फसलों के लिए अलग अलग पोषक तत्व की आवश्यकता होती है जिसे जैविक तरीके से निर्माण कर किसान उपयोग कर रहे है जैसे राइजोबियम, ऐजेक्टोबेक्टर, ट्राइकोडरमा का उपयोग करते है। जैविक कीट नियंत्रण मे अग्नयास्त्र, नीमास्त्र, तुलसस्त्र, हींगास्त्र, लमित, मठास्त्र आदि का प्रयोग कर जैविक खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है। इससे उत्पादकता मे लगातार वृद्धि हो रही है।

आंगनवाड़ी नवीकरण एवं रंगरोगन कार्यक्रम :– जिले मे विभाग द्वारा आंगनवाड़ी केन्द्र को आदर्श आंगनवाड़ी बनाने काम कर ही रही है इसी दौर मे संस्था मानव जीवन विकास समिति ने बिजौरी गांव की आंगनवाड़ी को गोद लेकर आदर्श आंगनवाड़ी बनाने स्वयं के व्यय से काम कराने तैयार हुई। महिला एवं बाल विकास विभाग को अवगत भी कराया जिसके पश्चात केन्द्र को 22000 की लागत से पुताई, रंगाई, रंगरोगन कर चित्रकारी कार्य कर केन्द्र को बच्चों के अनुरूप बेहतर तरीके से केन्द्र को आकर्षक बनाया है। इसकी खबर मीडिया मे जाते ही पूरे जिले मे आदर्श आंगनवाड़ी केन्द्र के नाम से मसहूर हो गया। महिला एवं बाल विकास विभाग से अधिकारी देखने आये संस्था के इस काम की सराहना भी की और उन्होने ने कहा की ऐसी आंगनवाड़ी आदर्श केन्द्र की श्रेणी मे आती है, सर्व सुविधा युक्त हो, रंगरोगन एवं चित्रकारी हो जिससे बच्चों का पढ़ाई मे मन लगे। केन्द्र की चित्रकारिता बच्चों का मन मोह रही है पहले की अपेक्षा केन्द्र मे बच्चों की उपस्थिति बढ़ी है। आंगनवाड़ी कार्यकर्ता व सहायिका संस्था के काम से बहुत ही खुश है क्योंकि केन्द्र की गुणवत्ता बढ़ने से बच्चे आने लगे इसके साथ परियोजना विभाग के अधिकारियों का आना भी शुरू हो गया है जिससे काम मे निखार आया है। ब्लॉक की सभी आंगनवाड़ियों की तुलना मे बिजौरी गांव की आंगनवाड़ी नं.1 मे मानी जाती है।

आंगनवाड़ी केन्द्र मे संचालित सभी गतिविधियां भी नियमित होने लगी है जैसे किशोरी बालिकाओं का पंजीयन, बैठक एवं जरूरी सलाह के साथ आयरन व कैल्शियम खाने की समझाईस दी जाती है। गर्भवती महिलाओं का पंजीयन एवं समय समय जांच व उपचार के लिए प्रेरित करना। धात्री महिला व बच्चों की आवश्यक देखभाल भी आंगनवाड़ी कार्यकर्ता द्वारा समय पर किया जाने लगा है। इसका प्रभाव यह रहा है कि शिशु मृत्यु एवं मातृ मृत्यु नही हुई है समय पर ईलाज व मदद मिल पाती है, बच्चे कुपोषण के शिकार नही होते है।

समिति ने आंगनबाड़ी में कराया रंगरोगन

खेल-खेल में बच्चे करेंगे पढ़ाई

कटनी. जिले में आंगनवाड़ियों को आदर्श आंगनवाड़ी बनाने पहल चल रही है। केंद्रों में बच्चों के लिए बेहतर माहौल देने के लिए पहल की जा रही है। यहां पर रंगरोगन, चित्रकारी आदि की जा रही है। इसको लेकर महिला एवं बाल विकास विभाग सहित आंगनवाड़ी केंद्र की कार्यकर्ता व सहायिकाओं द्वारा पहल की जा रही है। इसी क्रम में एक समाजसेवी संस्था भी आगे आकर केंद्र में बच्चों के लिए पहल कर रही है। ग्राम बिजौरी के आंगनवाड़ी केंद्र में मानव जीवन विकास समिति ने केंद्र में रंगरोगन का काम कराया है। मानव जीवन विकास समिति के प्रमुख निर्भय सिंह के नेतृत्व में यह किया गया। यहां पर बारह खड़ी, वर्णमाला, गणित, जनरल नॉलेज आदि के चित्र तैयार कराए गए हैं, ताकि छोटे-छोटे बच्चे बेहतर माहौल में पढ़ाई कर सकें।

पत्रिका Tue, 10 December 2019
epaper.patrika.com/c/46705265

कोविड–19 : Covid-19 (कोरोना) महामारी व्यापक रूप से पूरी दुनिया मे फैल रही है जिसके मद्देनजर रखते हुए पूरे देश मे **पहले चरण** मे 21 दिन का 25 मार्च से 14 अप्रैल तक का, फिर **दूसरे चरण** मे 19 दिन 15 अप्रैल से 3 मई तक का, **तीसरे चरण** का 15 दिन 4 मई से 17 मई तक का, **चौथे चरण** का 14 दिन 18 मई से 31 मई तक लॉकडाउन हुआ। इस महामारी के चलते लॉकडाउन के कारण संक्रमित लोगों की संख्या मे कमी तो आई है लेकिन वही दूसरी तरफ देखा जाये तो पलायन किये मजदूर दूसरे राज्यों मे कम्पनियो व फैक्ट्रियों मे जहां काम कर रहे थे वही रह गये। यातायात साधन की व्यवस्था न होने से मजदूर जहां काम कर रहे थे वही फंसे रह गये। दूसरा यह की गांव घर मे रह रहे दिहाड़ी मजदूरी कर रहे लोगों का भी जीवन दूभर हो गया। इस परिस्थिति मे सामाजिक संगठन व संस्थाऐं अपने अपने स्तर पर लोगों की मदद् कर रहे है। मानव जीवन विकास समिति एक गैर सरकारी संगठन है जो मध्यप्रदेश के सदूर ग्रामीण अंचलों मे लोगों की आजीविका के विषय पर काम कर रही है। समिति अपने स्तर पर कुछ महत्वपूर्ण कदम उठाकर कार्य को अंजाम दे रही है।

पलायनों की घर वापसी मे मदद् : उन्हे खाद्यान्न सामग्री प्रदान करने को भी कहा जिसमे उस परिवार को 25 किलो आटा व 5 किलो चावल के हिसाब से 2 क्विंटल आटा व 40 किलो चावल भी उपलब्ध कराया जिससे उनके चेहरे मे रौनक आयी।

- कटनी खमतरा के 5 मजदूरों को पूना शहर से घर वापसी मे मदद्।
- झारखण्ड के 35 मजदूरों को नरसिंहगढ़ दमोह से वापसी मे मदद्।
- भोपाल की 8 छात्राओं को झारखण्ड से भोपाल वापसी मे मदद्।

कोरेन्टाईन की व्यवस्था :

- कटनी बड़वारा मे फंसे 40 मजदूरों को मझगवां मे कोरेन्टाईन।
- दमोह, मण्डला, डिण्डौरी व बालाघाट के 150 मजदूरों को कोरेन्टाईन।

मुख्य बिन्दु :

- ✓ पलायनों की घर वापसी मे मदद्।
- ✓ कोरेन्टाईन की व्यवस्था।
- ✓ जरूरतमंदो को भोजन की व्यवस्था।
- ✓ मास्क का वितरण।

जरूरतमंदो को भोजन की व्यवस्था :

समिति के द्वारा मझगवां गांव मे स्टॉल लगाकर राहगीरो व गांव के उन परिवार को जिनके पास भोजन की व्यवस्था नही हो पाती है उन्हे कार्यकर्ताओं की मदद से भोजन कराया जा रहा है। भोजन करने आये लोगों को कोरोना महामारी से बचने लॉकडाउन का पालन करने को भी कहा जाता है। साथ ही उन्हे मास्क पहनाकर ही भोजन कराया जाता है।

4000 मास्क तैयार कर वितरण किया गया :

मानव जीवन विकास समिति द्वारा 4000 मास्क तैयार करवाया जाकर लोगों का निःशुल्क वितरण किया गया। कटनी जिले के बड़वारा ब्लॉक के 20 गांव के 1000 लोगों को और दमोह जिले के तेन्दुखेड़ा ब्लॉक के 60 गांव के 3000 लोगों को मास्क वितरण किया गया। साथ ही कोरोना महामारी से बचने के उपाय भी बताये गये। कोरोना महामारी से बचने क्या सावधानी रखनी है बताया गया। बताया गया की लॉकडाउन का पालन सभी को करना है, बिना जरूरी काम के किसी को भी घर से बाहर नही निकलना है सबको घर पर ही रहना है। साफ सफाई का विशेष ध्यान रखा जाये सेनेटाईजर का उपयोग किया जाये सावधानी ही बचाव है।

मुख्य बिन्दु :

● आर्थिक सहायता । ● राहत सामग्री वितरण।

● सोशल डिस्टेंशिंग का पालन । ● गांव मे ही रोजगार

आर्थिक सहायता :

- बिहार मे 4 गांव के 75 परिवार को आर्थिक सहायता की गई।
- डिण्डौरी जिले के समनापुर ब्लॉक के 10 गांव के 105 परिवार को आर्थिक सहायता की गई।
- मण्डला जिले के बिछिया ब्लॉक के 4 गांव के 95 परिवार को आर्थिक सहायता की गई।
- दमोह जिले के तेन्दुखेड़ा ब्लॉक 60 गांव के 850 परिवार को आर्थिक सहायता की गई।

राहत सामग्री वितरण : 14 प्रकार के खाद्यान्न किट का बंटवारा किये जबकि हमने बीआरएलएफ के द्वारा दिये गये सूची के आधार पर बच्चों को ध्यान मे रखते हुए 4 पॉकेट बिस्किट भी शामिल किये गये तथा इसके अलावा नमक और कपड़े धोने का पाउडर के साथ 5 किलो आटा और 5 किलो चॉवल जबकि बीआरएलएफ की सूची मे आटा/चावल मिलाकर 8 किलोग्राम था।

जिला मण्डला : जिले के बिछिया ब्लॉक के 4 गांव से 95 परिवार को सहायता।

जिला डिण्डौरी : जिले के समनापुर ब्लॉक के 10 गांव से 105 परिवार को सहायता।

जिला दमोह : जिले के तेन्दुखेड़ा ब्लॉक के 60 गांव के 850 परिवार को सहायता।

सोशल डिस्टेंशिंग की जानकारी देते हुए : कोरोना संकट की इस घड़ी मे **मानव जीवन विकास समिति** कोरोना महामारी से बचाव के लिए गांव गांव मे अपने कार्यकर्ता टीम की मदद से लोगों को लगातार सोशल डिस्टेंशिंग की जानकारी दे रही है। कोरोना महामारी दुनिया भर के लोगों को तबाह कर दिया है ऐसे मे संक्रमण से बचने के लिए सिर्फ जागरूकता और समझदारी ही बचाव हो सकती है। ऐसे मे पिछड़े क्षेत्रो मे आदिवासी बैगा समुदाय को बताया गया कि आप सभी को लॉकडाउन की अवधि मे घर के अंदर ही रहना है ज्यादा जरूरी काम होने पर ही घर से बाहर निकले, ऐसे परिस्थिति मे लोगों से कम से कम 2 मीटर की दूरी आपस मे बनाये रखना है जिससे संक्रमण एक दूसरे को ग्रसित न कर पाये। समिति कार्यक्षेत्र के जिले दमोह, मण्डला, डिण्डौरी, बालाघाट के अलग अलग गांव गांव मे जागरूक कर रहे है।

गांव मे ही रोजगार मुहैया कराना : **मानव जीवन विकास समिति** कार्यकर्ता टीम की मदद से दमोह जिले के तेन्दुखेड़ा ब्लॉक के 100 गांव मे लोगों की स्थायी आजीविका सुनिश्चित कराने काम किया जा रहा है। अभी हाल ही मे कोरोना महामारी का कहर फैलते ही जा रहा है तो एक तरफ लोगों को अपने घर वापसी का दौरा रूकने का नाम ही नही लेता जिसको देखते हुए लोगों को पलायन से उनके घर तक पहुंचाने का काम कर रही है। तो दूसरी तरफ लोगों को अपने गांव मे ही रोजगार उपलब्ध कराने पंचायत से मनरेगा रोजगार गारण्टी का काम की मुहैया करा रही है जिससे लोग अपने घरों मे रहकर काम कर सके, इस दौरान लगभग 5000 लोगों को अपने गांव मे रोजगार गारण्टी अन्तर्गत तालाब के काम, नाले के काम, मेढ़ बंधान के काम मे रोजगार दिलाने का काम किया है।

तालाब निर्माण – मानव जीवन विकास समिति द्वारा अपने कार्यक्षेत्र के गांव मे किसानों को वन अधिकार अधिनियम के तहत प्राप्त पट्टे की जमीन को विस्तार करने के लिए व उसी जमीन से स्थायी आजीविका सुनिश्चित करने के उद्धेश्य से किसान के खेत से आस पास के क्षेत्र मे 196400 रूपये की लागत से तालाब निर्माण कराया गया। यह बताते हुऐ हर्ष हो रहा है कि इस तालाब से किसानों को पिछले साल की अपेक्षा इस साल फसल आमदनी मे दोगुनी वृद्धि हुई है।

खेत तालाब निर्माण – दमोह जिले के तेन्दुखेड़ा ब्लॉक के गांव मे किसानों को सबसे पहले वन अधिकार अधिनियम अन्तर्गत कब्जे वाली भूमि का पट्टा दिलाया गया इसके उपरान्त उसी भूमि किसानों की मदद् से 6000 रूपये की लागत वाला खेत मे तालाब निर्माण कराया जिससे किसान को खेत मे पानी की समस्या हो रही थी, अब नही हो रही है। किसान अपने खेत मे तालाब बनने से एक फसली उपज लेने की बजाय अब दो फसली उपज ले रहा है जिससे अब किसान को अपने खेत मे पर्याप्त फसल का उत्पादन होने से उसे पलायन करने की समस्या अब नही है। किसान को स्थायी आजीविका सुनिश्चित करने प्रयास किया जा रहा है।

मेढ़ बंधान कार्य – भूमि का मिट्टी कटाव रोकने के लिए किसान को मेढ़ बंधान कराने तैयार किया गया। इसमे किसान का योगदान रहता है बांकी के खर्चे को संस्था अपने मदद् से अंशदान के रूप मे मेढ़ बंधान कार्य मे लगाती है जिससे भूमि संरक्षण हो जाता है। यह की लोगों की स्थायी आजीविका सुनिश्चित करने लगातार प्रयास कर रहे संस्था ने कार्यक्षेत्र के गांव मे किसानों के खेत मे 42000 रूपये की लागत से मेढ़ बंधान कराया गया जिससे बाद से जिस खेत मे कोदो, तिलि, राहर की फसल होती थी उसी खेत मे अब धान, गेहूं, चना की भी फसल उगाई जा रही है।

कुंआ निर्माण – जिस किसान के खेत मे पानी की समस्या हो रही थी जिसके कारण वर्षा का पानी नही मिलने से फसल नष्ट हो जाती थी। यह समस्या देखते हुए संस्था कार्यकर्ताओं की मदद् से उस किसान से सम्पर्क कर तय किया की आपको अपने खेत मे कुंआ बनाने से सिंचाई के लिए पानी मिल सकता है जिससे अनाज उत्पादन मे मदद् मिलेगी। इसके लिए आपको स्वयं का योगदान लगाना होगा और संस्था भी अपना अंशदान लगायेगी जिससे 12000 रूपये का अंशदान संस्था का और बांकी किसान को योगदान लगने से कुंआ बन पाया। इस प्रकार से कुंआ बनने पर किसान की फसल उत्पादन मे वृद्धि हुई है।

सिंचाई मशीन व पाईप सेट – स्प्रिंकलर सेट और विद्युत मशीन के अभाव के अभाव मे किसानों को प्रत्येक वर्ष प्रति किसान को 10 से 20 हजार रूपये प्रति फसल उत्पादन मे हानि उठानी पड़ती थी। यह की मानव जीवन विकास समिति लोगों की आजीविका सुनिश्चित करने, सालाना आय बढ़ाने प्रयासरत है जिसमे किसानों को सिंचाई मशीन व पाईप सेट 2,86,039.00 रूपये की लागत से खरीदकर किसानों को उनकी देखरेख मे सौंपा। सिंचाई मशीन व पाईप सेट के उपयोग से इस वर्ष किसानों को 10 से 20 हजार रूपये प्रति फसल की उत्पादकता मे बढ़ोत्तरी होगी।

चैक डेम और स्टाप डेम – चैकडैम यानि लघु बांध जमीन के नीचे के पानी का खजाना बढ़ाने के लिए सूखी धरती को हरा भरा करने के लिए चेकडैम सबसे सस्ता तरीका है। यह मिट्टी, पत्थर या सीमेंट–रोड़ी का बना हुआ होता है, इसे किसी भी झरने या नाले के जल प्रवाह की आड़ी दिशा मे खड़ा किया जाता है। लघु बांध से तात्पर्य वर्षा जल को बांधना होता है इसमे भूजल का स्तर बढ़ता है। यह एकत्रित किया हुआ जल किसानों के फसल सिंचाई मे मदद् करता है जिससे फसल उत्पादन मे बढ़ोत्तरी होती है।

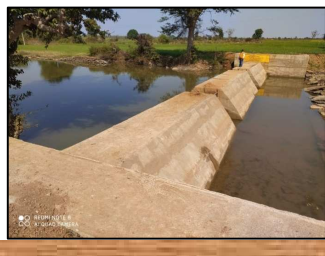

स्कालरशिपः– विशेष आवश्यकता वाले सामाजिक कार्यकर्ता व उनके बच्चों को समिति के द्वारा स्कालरशिप दिया जाता है, जिससे आवश्यकतानुसार सुविधा मिल सके। काफी लम्बे समय से सामाजिक क्षेत्र में उन तमाम सामाजिक कार्यकर्ताओं को उनके बच्चों की पढाई हेतु उनके सुचारू रूप से आवेदन देने पर समिति निर्णय लेती है। मानव जीवन विकास समिति द्वारा दो सदस्यी कमेटी का गठन किया गया है, जिनके पास आवेदन विचार हेतु भेजा जाता है और यह कमेटी निर्णय लेती है। यह पहले से तय है कि यह सपोर्ट उन साथियों को दिया जायेगा जो लम्बे समय से सामाजिक क्षेत्र के काम में लगे हैं और अपने बच्चों की पढाई व स्वास्थ्य खराब होने दवाई भी नहीं करवा पा रहे हैं, ऐसे साथियों का आवेदन आने पर कमेटी द्वारा विचार किया जाता है। उच्च शिक्षा की पढ़ाई करने के लिए संस्था ने तय किया की ऐसे छात्र जिनकी आर्थिक स्थिति कमजोर है उसे शिक्षा प्राप्त करने हेतु आर्थिक मदद व सपोर्ट किया जाये जिससे अच्छी शिक्षा प्राप्त कर सके। इसके अलावा कार्यकर्ता अपने बच्चों का विवाह नही कर पा रहा है उस स्थिति मे भी बच्चे बच्चियों के विवाह के लिए संस्था मदद् करती है।

, tqds'ku ikVZ– इसके अन्तर्गत 6 Nk=&Nk=kvks dks vkfFkZd ikVZ कर शिक्षा मे प्रगति लाया गया।

1. शमसुदान की पुत्री आयसा फरहाना निवासी मालापुरम जिला केरल को उच्च शिक्षा मेडिकल कालेज की पढ़ाई हेतु 65000 रूपये की मदद् की गई।
2. सरोज पाण्डेय निवासी डूडी, सहलावन पिपरिया जिला कटनी को पुत्री की पढ़ाई हेतु 5000 रूपये की मदद् की गई।
3. अमित बेन की पुत्री सावन बेन निवासी बरछेका जिला कटनी को पढ़ाई हेतु 4500 रूपये की मदद् की गई।
4. स्व.भीम बहेलिया का पुत्र भविष्य बहेलिया निवासी निगहरा जिला कटनी को पढ़ाई हेतु 4500 रूपये की मदद् की गई।
5. चरण सिंह की पुत्री माही निवासी भदौरा जिला कटनी को पढ़ाई 4500 रूपये की मदद् की गई।
6. विजय चौधरी की पुत्री प्राक्षी चौधरी निवासी बरछेका जिला कटनी को पढ़ाई 4500 रूपये की मदद् की गई।

fjLd ikVZ& ¼LokLF;@fookg½ इसके अन्तर्गत 12 लोगों को विवाह व स्वास्थ्य सुधार हेतु आर्थिक सपोर्ट किया गया। सामाजिक क्षेत्र मे कार्य कर रहे सामाजिक कार्यकर्ताओं के बच्चों को आर्थिक सपोर्ट करना समिति का निर्णय है जिससे स्वास्थ्य सुविधा मिल सके। यह की समिति से जुड़े कार्यकर्ता व उनके परिवार के अन्य सदस्य जब कभी लम्बी व गंभीर बीमारी से जूझ रहा होता है तो समिति के पास जब ऐसी कोई भी खबर आती है या आवेदन आते है तो समिति अपने कमेटी से विचार विमर्श कर सपोर्ट करने का निर्णय लेती है।

1- पीलाराम को पुत्री का विवाह हेतु 10000 रूपये की मदद् की गई।
2- रूपचंद्र देशपाण्डेय को 5000 रूपये का रिस्क सपोर्ट किया गया।
3- मनीष राजपूत को 10000 रूपये का रिस्क सपोर्ट किया गया।
4- रमेश चंद्र दुबे को 10000 रूपये का रिस्क सपोर्ट किया गया।
5- प्रसून लतान्त को 11000 रूपये का रिस्क सपोर्ट किया गया।
6- कोदूलाल विश्वकर्मा को 5000 रूपये का सपोर्ट किया गया।
7- सुजात सिंह को 5000 रूपये का रिस्क सपोर्ट किया गया।
8- हरिहर सिंह को 5000 रूपये का रिस्क सपोर्ट किया गया।
9- कृष्णानंद को 5000 रूपये का रिस्क सपोर्ट किया गया।
10- गुड्डा सिंह को 2800 रूपये ईलाज हेतु दिया गया।
11. लोकल मैरिज सपोर्ट 4000 रूपये की मदद् की गई।

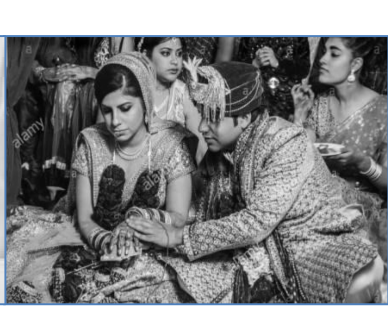

- साहूकारी से किसानों को मिली राहत किसानों की अगर माने तो साहूगिरि की गांव मे लोग तंग आ गये है। यह की लोगों को जब भी अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए एक नये पैसा की जरूरत होती तो ब्याज मे पैसा देकर लम्बी रकम बसूलते है, साहूकारी से छुटकारा पाने के लिए मानव जीवन विकास समिति ने अपने कार्यक्षेत्र के कुछ चिन्हित गरीबों को मोटर पम्प पाईप अनुदान दिया गया जिससे किसानों मे खुशी की लहर है अब ब्याज मे जाने वाला पैसा किसानों के पास बच जाता है। इससे पता चला है कि किसानों को हर साल की अपेक्षा कृषि उत्पादन मे 30 से 40 प्रतिशत तक बढ़ोत्तरी हुई है।

- पांच गांव मे पारम्परिक बीज बैंक की स्थापना यह की मानव जीवन विकास समिति भारत रूरल फाउण्डेशन दिल्ली की मदद से दमोह जिले के तेन्दुखेड़ा ब्लॉक के पांच गांव मे जैविक बीज और खाद का स्टोरेज किया है जिससे किसानों को प्रशिक्षण देकर जैविक खेती का काम शुरू किया है। इससे उत्पादकता तो बढ़ रही है साथ ही साथ रासायनिक युक्त खाद बीज का उपयोग करने से लोगों मे अनेको अनेक बीमारी का सामना करना पड़ रहा था बच्चों मे कुपोषण भी इसी वजह से बढ़ रहा था अब उसे भी रोका जा रहा है।

- एनपीएम आधारित खेती, किसानों के लिए एक वरदान साबित हो रही है। जैविक खाद, कम्पोस्ट व वर्मीकम्पोस्ट खाद एवं कीटनाशक दवा के छिड़काव से उतपादित अनाज से लोगों मे साईड इफेक्ट नही होता है साथ ही सभी किसान अपने आस पास से उत्पादित वनस्पति से ही कीटनाशक बना लेते है और अच्छी उत्पादन ले रहे है इससे रासायनिक दवाईयों मे जो खर्चा हो जाता था वह अब किसानों के पास बच जाता है इससे साबित होता है कि यह एनपीएम पद्धति खेती के लिए वरदान है।

- डेहरा गांव मे सामुदायिक तालाब के निर्माण के बाद 14 किसानों का पलायन रूका किसानों को खेती कार्य के लिए पानी की आवश्यकता तो बनी ही रहती है लेकिन दमोह जिले के तेन्दुखेड़ा ब्लॉक का डेहरा गांव जहां की खेतों से बारीस का पानी बह जाने से जमीन का जल स्त्रोत भी दिनों दिन गहरा होता चला जा रहा था जिससे अधिकांश खेतिहर जमीन बंजर भूमि मे बदलती जा रही थी किसानों का मानना था कि यदि खेत के आसपास तालाब बन जाये तो उसमे अधिक दिनों तक पानी बना रहेगा इससे जल स्त्रोत भी बढ़ेगा। ऐसा ही कुछ मानव जीवन विकास समिति ने किसानों और गांवों वालों के साथ मिलकर श्रमदान से एक बड़ा तालाब का निर्माण किया जिससे किसानों को उसके जरिये खेत मे पानी की समस्या खत्म हो गई और उसी खेत मे दो फसली उत्पादन करने लगे।

xfrfof/k QksVks

दैनिक भास्कर

24-Oct-2019
Page 4

कार्यक्रम • मानव जीवन विकास समिति कटनी द्वारा ग्राम रिचकुडी में वन अधिकार कानून के तहत शिविर का आयोजन किया गया

वन अधिकार कानून की विभिन्न जानकारियों से अवगत कराया

भास्कर संवाददाता | तेंदूखेड़ा

मानव जीवन विकास समिति कटनी द्वारा ग्राम रिच्कुडी में वन अधिकार कानून के तहत शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें अंकिता श्रुति ने उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि वन अधिकार कानून बने 11 वर्ष हो गए, लेकिन वास्तविक कब्जा धारी आज भी वंचित हैं।

विनोद पीएसआई ने कहा कि जिन लोगों को जमीन प्राप्त हो गई है, उस वन भूमि पर लोग रचनात्मक तरीके से खेती कर अपनी आजीविका चला रहे हैं। लोगों का पलायन रुका है। घनश्याम रायकवार ने उपस्थित लोगों को वन अधिकार कानून को बारीकी से समझाते हुए कहा कि व्यक्तिगत वन भूमि दावा फार्म के साथ सामुदायिक वन भूमि दावा फार्म भी ग्रामवासी लगाएं ताकि गांव के निस्तार के लिए अधिकार प्राप्त हो। जिसमें मवेशी चराने, पत्थर फोड़ने, लकड़ी लाने, वन उपज संकलन, ग्राम वासाहट, पौधरोपण, तालाब निर्माण, नदी नाले से निस्तार मिट्टी लाने, समाज के लिए जितने भी निस्तार होते हैं उन सभी निस्तारों के लिए वन भूमि प्राप्त करना है। सभी समाज के लोगों को मिलकर यह जमीन ग्राम पंचायत को प्राप्त होगी। कार्यक्रम में नरेश खटीक, मानसिंह, धनसिंह, मिलनबाई, प्रियंकाबाई, अवलेश, नंदनी, प्रतापसिंह, रोहित सहित अनेक लोग मौजूद थे।

मांगः वन क्षेत्र में रहने वाले लोगों को मिले अधिकार

जबेरा। जबेरा विधान सभा क्षेत्र के 80 ग्रामों में सामुदायिक अधिकारों के लिए अनुसूचित जनजाति और अन्य परंपरागत वन व उसके आसपास के इलाकों में रहने वाले लोगों के लिए कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें ग्रामीणों को निस्तार के लिए जमीन के हक की मांग की गई। इस दौरान घनश्याम रैकवार ने कहा कि जीवन जीने के प्राकृतिक संसाधनों का हम सभी को सुरक्षित रखते हुए रचनात्मक कार्यों के लिए उपयोग में लेना है। इसके लिए जैव विविधता, घुमंतु जनजातियों के अधिकारी के साथ पंचायत के अंतर्गत आने वाले वनवासियों के लिए प्रदत्त कानून तभी सार्थक होगा जब वंचित समुदाय सशक्त होगा। इस दौरान बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे।

JIO 4G VoLTE 07:00

गणमान्य लोगों की भी उपस्थिति रही। आम सहमति बनाई गई। चौकी प्रभारी ने राजेंद्र राय, दीपक यादव, मुलायमचंद आश्वस्त किया। स्वरूप चंद ज

ग्राम पंचायत बमहोरी में अपनी समस्या सुनाने पहुंचे ग्रामीण

तेंदूखेड़ा (नईदुनिया न्यूज)। मानव जीवन विकास समिति कटनी तेंदूखेड़ा ब्लाक के लगभग आधे गांव में कार्य कर रही है। सैकड़ों लोग इस समिति के माध्यम से लाभांवित होकर आज अपनी जीविका चला रहे हैं। इसी क्रम में सोमवार को ग्राम पंचायत बमोहरी में एक आयोजन किया गया जिसे जनसुनवाई नाम दिया गया। इस कार्यक्रम में लगभग 300 से ज्यादा दूरदराज के हितग्राहियों ने भाग लिया और अपनी समस्या बताई। जनसुवाई में लगभग एक दर्जन ग्राम पंचायतों के सचिव और सरपंच भी मौजूद रहे जिन्होंने गांव के लोगों के आवेदन पर विशेष रुप से अमल करने की बात कही। जनसुवाई की शुरुआत सचिव निर्भय सिंह द्वारा की गई पूरे आयोजन का संचालन घनश्याम रैकवार ने किया। इस दौरान पूर्व बीडीसी डॉ परम सिंह और बमोहरी सरपंच संतोष यादव की भी मौजूदगी रही।

इन्होंने किया संबोधित : जनसुवाई आयोजन करने के पूर्व मानव जीवन विकास समिति द्वारा ब्लाक के साथ जिले के अधिकारियों को भी आमंत्रित किया था, लेकिन अधिकारी नहीं पहुंचे। जिससे मानव जीवन समिति हितग्राहियों के आवेदन लेकर अधिकारियों से निराकरण की मांग करेगी। इस मौके पर चंद्रगोपाल कुशवाहा ने मौजूद ग्रामीणों को संबोधित भी किया।

तेंदूखेड़ा। कार्यक्रम में उपस्थित विभिन्न पंचायतों के ग्रामीण। • नईदुनिया

वनअधिकार जनजागरुकता यात्रा का चल रहा आयोजन

तेंदूखेड़ा। यात्रा में शामिल लोग। ● **नईदुनिया**

तेंदूखेड़ा। मानव जीवन विकास समिति भारत रुरल लाइवली हुड फाउंडेशन दिल्ली के द्वारा ब्लॉक तेदूखेड़ा में वन अधिकार जन जागरुकता अभियान पद यात्रा का आयोजन 18 नवम्बर से किया जा रहा है।

अंकिता द्वारा यात्रा के दौरान लोगों को मप्र वन मित्र एप की जानकारी दी जा रही है। जैसे दावेदार की पति-पत्नी की दो-दो फोटो, दावेदार का आधार कार्ड मोबाइल नंबर से लिंक होना, दावेदार का फोटो पहचान पत्र, जॉब कार्ड, राशन कार्ड अनुसूचित जनजाति वर्ग के दावेदारो के लिए वन भूमि पर काबिज होने का साक्ष्य 13 दिसंबर 2005 के पूर्व का निवास प्रमाण पत्र आदि के बारे में बताया जा रहा है। घनश्याम प्रसाद रैकवार ने परंपरागत खेती करने के तरीके सिखाए जिससे गांव में लोगों की आर्थिक स्थिति मजबूतए हो। उक्त यात्रा ग्राम धनगोर, बहेरिया रैयत, बहेरियामाल, जामुन, हनुमतबागो, पिंडरई, जैतगढ़, खमरिया शिवलाल, पिंडरई आदि गांव से निकाली जा रही है। यात्रा में मिलन, ध्रुर्व, यादव, पप्पू सिंह, रज्जूसिंह, अरविंद जैन, दशरथ सिंह, भूपतसिंह आदि शामिल हैं।

नईदुनिया | दमोह | 11 मई 2019

किसानों को अरहर दाल की खेती करने के बारे में दिया गया प्रशिक्षण

तेंदूखेड़ा। नईदुनिया न्यूज

ब्लॉक अंतर्गत आने वाली ग्राम पंचायत भैंसा के ग्राम फुलर में कृषक प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। एकता परिषद व महात्मा गांधी सेवा आश्रम की ओर से ग्राम फुलर में किसानों को अरहर दाल की खेती के संदर्भ में विकास प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर एकता परिषद के अनिल कुमार गुप्ता ने बताया कि अनुसूचित जनजाति और अन्य परंपरागत वन निवासी, वन अधिकारों की मान्यता अधिनियम 2006 व नियम 2007 से प्राप्त भूमि पर जीवन जीने के संसाधन खड़े हो रहे हैं और हुए हैं। गैर कीटनाशी प्रबंधन के साथ मिलकर काम करने की आवश्यकता है। विनोद कुमार निरंजन ने कहा कि फसल संघनीकर्ण विधि से ज्यादा पैदावार के कारण प्रति पौधा अधिक शाखाओं की संख्या दाने वाली फलियों कि अधिक संख्या, फसलों की अधिक लम्बाई व मोटाई प्रतिबाली में दानों का मोटा व बड़ा आकार पौधों की अधिक लंबाई व अधिक लंबा तना, अनाज व भूसे का अधिक उत्पादन फसल संघनीकर्ण विधि विशेषताओं के बारे में बताया।

कम बीज की आवश्यकता, कम पानी की आवश्यकता, अधिक दूरी पर बीज की बुवाई, खरपतवार को मिट्टी में मिलाना, जैविक खाद का प्रयोग रोग व कीटो का जैविक व यान्त्रिक नियंत्रण के साथ फसल संघनीकर्ण विधि के चरण भूमि का चयन, भूमि समतलीकरड़, भूमि की गुणवत्ता में वृद्धि, बीज का चयन अंकुरण, परीक्षण बीज उपचार आदि के बारे में जानकारी दी गई। निर्भय सिंह ने कहा कि अरहर दाल की खेती के संदर्भ में आप जो अनाज का उत्पादन करेंगे। जैविक खेती और उनकी फसल को वाजिब मूल्य दिलाने के माध्यम से दाल मशीन लगाकर बाजार मूल्य उपलब्ध कराने का प्रयास है। कार्यक्रम का आभार ब्लाक समन्वयक घनश्याम प्रसाद रायकवार ने माना। वहीं ग्रामीण अंचलों से आए कंछेदी सिंग गौंड़, नारायण सिंग गौंड़ सेहरी, दुर्गसिंग गौंड़, अनीता बाई भैंसा आदि की उपस्थिति रही।

जय जगत संवाद श्रृंखला की शुरुआत

नमक सत्याग्रह से दुनियां ने सीखा अहिंसा का पाठ

कटनी/ब्यूरो। यह बा बापू का 150वां वर्ष है, साथ ही 12 मार्च दांडी यात्रा के शुभारम्भ का यादगार दिन है। यह नमक सत्याग्रह का 90 वां वर्ष भी है। इस मौके पर जय जगत संवाद श्रंखला का शुभारंभ मानव जीवन विकास समिति गांधी आश्रम बिजौरी में वरिष्ठ गांधी विचारक सुरेन्द्र राजन, नन्दलाल सिंह एवं निर्भय सिंह की उपस्थिति में किया गया। सुरेन्द्र राजन ने दांडी यात्रा एवं नमक सत्याग्रह की कहानी सुनाते हुए युवाओं को दुनिया में शांति लाने के लिए जय जगत का मन्त्र अपनाने की बात कही। उन्होंने कहा कि इस मन्त्र से संत विनोबा भावे ने न सिर्फ लोगों के बीच मैत्री का सन्देश दिया बल्कि भूदान आन्दोलन चलाकर लाखों एकड़ जमीन हासिल की। नन्दलाल सिंह ने कहा कि महात्मा गाँधी द्वारा चलाये गए नमक सत्याग्रह से पूरी दुनिया ने अहिंसा का पाठ सीखा है। उन्होंने युवाओं को गांधी विचार पढ़ने समझने की बात कही तथा सत्य एवं अहिंसा के रास्ते पर चलते हुए जीवन जीने का सन्देश दिया। निर्भय सिंह ने कहा की गांधी विचार को युवाओं से जोड़ने के लिए ऐसे संवाद की अत्यंत आवश्यकता है। उन्होंने इसके लिए हर तरह के सहयोग की बात कही। कार्यक्रम का संचालन रामकिशोर द्वारा किया गया।

14 नईदुनिया
जबलपुर, सोमवार 20 मई 2019
दमोह

आधुनिक तरीकों का इस्तेमाल कर अच्छी फसल लेकर बन रहे आत्मनिर्भर

तेंदूखेड़ा नईदुनिया न्यूज

व्यक्ति चाहे तो कुछ भी कर सकता है बस उसे एक सही मार्गदर्शन की आवश्यकता रहती है। इसके बाद वह अपनी राह खुद चुनकर आगे बढ़ता जाता है, लेकिन यदि उसके पास साधन तो है और मार्गदर्शक नहीं है तो फिर आगे बढ़ना मुश्किल रहता है। ऐसा ही मामला नौरादेही अभयारण्य महागवां गांव में देखने मिला। जहां मानव जीवन विकास समिति द्वारा बताए गए उपायों से कुछ किसान आज आत्मनिर्भर होकर अपना रोजगार कर रहे हैं। जबकि यही किसान कुछ समय तक बेरोजगार थे, लेकिन मानव जीवन विकास समिति और एकता परिषद से आए सदस्यों ने आदिवासियों को आधुनिक तरीके से फसल करने के साथ कम पानी वाली फसल और सब्जी बोने के तरीके बताए। जब किसानों ने इसका उपयोग तो गर्मियों के दिनों में बंजर पड़े खेत आज हरे भरे दिखने लगे। यह किसान भी सब्जी की खेती के लिए प्रेरित हुए जिन्होंने इस वर्ष खेती नहीं की थी।

मानव विकास समिति के ब्लाक समन्वयक घनश्याम रैकवार ने बताया कि कुछ महीने पहले एकता परिषद द्वारा एक शिविर आयोजित किया था। जिसमें आदिवासियों को सब्जी की फसल उगाने के उपाय बताए थे। इसी से प्रेरित होकर महागवां के कैलाश पिता राजाराम आदिवासी ने अपने खेतों में कुछ सब्जी बोने के साथ नदी की उस जगह में भी खेती बोई जहां पानी खत्म हो गया, लेकिन नमी आज भी है। इसके बाद आज उसके सभी खेत सब्जी की फसल से भरे हुए हैं। साथ ही गांव के अन्य आदिवासियों ने भी इसे अपना व्यवसाय बनाया।

तेंदूखेड़ा। सब्जी के खेत में खड़ा किसान।

ekuo thou fodkl lfefr

धन्यवाद् !